नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : .....

दिनांक : 21.05.2016

प्रकाशनार्थ

बी0एड0 की शिक्षा तब तक अधूरी है जब तक कि बी0एड0 के विद्यार्थियों को शिक्षकीय जीवन जीने की कला न सिखा दिया जाय। वास्तव में शिक्षक वही है जो अपने शिष्यों के बल पर समाज की धारा बदल दे। शिक्षक वह है जिसकी समाज में तूती बोलती हो। यह तब होता है जब शिक्षक देवत्व की दुनिया का प्रतिनिधि हो। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल धूषण गोरखपुर में 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ पुण्यतिथि शताब्दी वर्ष' के अन्तर्गत आज से प्रारम्भ **योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति सप्त दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते** हुए मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार **डॉ वेद प्रकाश पाण्डेय** ने कही।

डॉ पाण्डेय ने आगे कहा कि आज भी इस भीड़ में देवत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षक कहीं–कहीं चमकते हुए दिख रहे हैं तथापि देवत्व आरोपित गुणों से युक्त शिक्षकों का संसार खड़ा किये वगैर योजनाबद्ध योग्यतम् भावी पीढ़ी का निर्माण नही किया जा सकता । बी0एड0 पाठ्यक्रम संचालित करने वाले शिक्षा–संस्थानों को इस दृष्टि से विकसित करना होगा। वा केवल पाठ्यक्रम ही नही अपितु सम्पूर्ण जीवन जीवन को चमकाने–महकाने की जद्दोजहद करने वाला ही देवत्व प्राप्त करता है। अतः आज आवश्यकता है इसी जद्दोजहद को छात्रों में पैदा करना।

विषय विशेषज्ञ दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज बी0एड विभाग के एसोसिएट प्रो0 डॉ राजशरण शाही ने कहा कि शिक्षक का प्रभाव कक्षा ही नही कक्षा के बाहर भी होना चाहिए। शिक्षा व्यक्तित्व का विकास ही नही अपितु प्रभाव उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षक का कार्य ही है छात्र को पढ़ना/छात्र का अपना एक सपना है उसे पूर्ण करने योग्य बनाना शिक्षक का कार्य है न कि अपना सपना उस पर थोप देना। महात्मा गॉधी ने कहा था कि शिक्षा का उद्देश्य हृदय,

मस्तिष्क एवं कौशल का विकास है। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था कि वह शिक्षा, शिक्षा नहीं तो चारित्रिक एवं मानसिक विकास न कर सके तथा व्यक्ति को स्वावलम्बी न बना दे। अज्ञेय का भी कहना था कि शिक्षा वह है जो हमारा हृदय मुक्त कर दे, चिन्तन मुक्त करे दे, हाथ मुक्त कर दें अर्थात आत्मनिर्भर बना दें। ऐसी शिक्षा तब होगी जब शिक्षक छात्रों की अन्तरात्मा को प्रभावित कर दें। शिक्षा ईश्वरीय कार्य है और शिक्षक ईश्वर का सहयात्री है। राष्ट्र को समर्पित युवा शिक्षा ही तैयार कर सकती है।

आज की कार्यशाला में प्रातः प्रथम सत्र में योग एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण तथा द्वितीय सत्र में 'द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम एक समीक्षा' बिषय पर सामूहिक चर्चा हुई। पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं पर सूक्ष्म विश्लेषण किया गया । बी0एड0 के विद्याार्थियों ने अपना–अपना अभिमत रखा एवं प्रश्नोंत्तर किया। पाठ्यक्रम के चारों उद्देश्य आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद एवं यथार्थवाद पर आए सभी प्रश्नों के के माध्यम से सम्पूर्ण पाठ्क्रम। प्राचार्य डॉ प्रदीप राव ने अतिथियों का स्वागत तथा विषय प्रर्वतन किया।

इससे पूर्व कार्यशाला में प्रशिक्षित अध्यापकों को योग शिक्षा के अन्तर्गत प्राचार्य डॉ प्रदीप राव ने योगाभ्यास एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। इसमें प्राणायाम और योग के विभिन्न आसनों और क्रियाओं का विधिवत अभ्यास क्रिया सम्पन्न हुई। यह योगाभ्यास प्रतिदिन कार्यशाला सम्पन्न होगी।

(प्रकाश प्रियदर्शी)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी